लिपुलेख दर्रा

स्रोत: IE

भारत ने लिपुलेख दर्रे के माध्यम से **भारत-चीन सीमा व्यापार** फिर से शुरू करने पर नेपाल की आपत्तियों को खारिज कर दिया है और यह स्पष्ट किया है कि नेपाल के दावे ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित नहीं हैं।

- **नेपाल की आपत्ति:** नेपाल का दावा है कि लिपुलेख उनके संविधान के अनुसार उसके क्षेत्र का हिस्सा है।
- **भारत की स्थिति:** भारत ने दोहराया कि **लिपुलेख दर्रे** के माध्यम से **सीमा व्यापार वर्ष 1954 में शुरू** हुआ था तथा कोविड-19 के कारण हुई रुकावटों से पहले यह कई दशकों तक जारी रहा।
- **लिपुलेख दर्रा:** यह उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र में एक उच्च-ऊँचाई वाला पर्वतीय दर्रा है, जो **भारत, नेपाल और चीन की त्रिजंक्शन (तीन देशों की सीमा)** के निकट स्थित है, जो उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है।
  - रणनीतिक रूप से स्थित, यह **उच्च हिमालय** के लिये एक द्वार का कार्य करता है और ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह **भारतीय उपमहाद्वीप** को तिब्बती पठार से जोड़ने वाला प्राचीन व्यापार मार्ग रहा है।
  - **लिपुलेख** वर्ष 1992 में चीन के साथ व्यापार के लिये खोला जाने वाला पहला भारतीय सीमा चौकी था, इसके बाद **हिमाचल प्रदेश में शिपकी ला (1994) और सिक्किम में नाथू ला (2006)** खोले गए।
  - पुराना **लिपुलेख दर्रा,** जो उत्तराखंड के पिथौरागढ़ ज़िले की व्यास घाटी में स्थित है, कैलाश मानसरोवर यात्रा का हिस्सा होने के कारण अत्यधिक धार्मिक महत्त्व रखता है।

और पढ़ें: [कैलाश मानसरोवर यात्रा को जोड़ने वाले भू-रणनीतिक दर्रे]

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/lipulekh-pass-1